भाषा बिंदु (व्याकरण)

छंद

प्रिय मित्रो ,

हिंदी प्रथम भाषा कुमारभारती (9 वीं और 10 वीं) में छंदों की मात्रा की गणना करने के लिए पूछा जाता है । यहाँ छंदों की मात्रा की गणना के नियम स्पष्ट किए गए हैं । सोरठा छंद की मात्रा की गणना करके उदाहरण भी दिया गया है । तो आइए हम जानने का प्रयास करते हैं कि छंदों की मात्रा गणना के नियम क्या हैं ?

वर्णों की संख्या एवं स्थान संबंधी नियमों के आधार पर लिखी गई कविता या गीत को **छंद** कहते हैं। छंदों के कारण कविता में लय, ताल एवं रोचकता आती है।

मात्रा : छंदों में मात्राओं का बड़ा महत्त्व होता है। किसी वर्ण या अक्षर को बोलने में लगने वाले समय को वर्ण का भार या मात्रा कहते हैं। बोलने में लगने वाले समय के अनुसार इसे दो भागों में बाँटा गया है :-

१) लघु या ह्रस्व वर्ण- जिन वर्णों या अक्षरों के उच्चारण में कम समय लगता है उसे लघु या ह्रस्व वर्ण कहते हैं। जैसे अ,इ,उ,ऋ आदि । इनकी मात्रा लगे व्यंजन जैसे क , कि, कु, कृ आदि लघु वर्ण माने जाते हैं। चंद्रबिंदु (अनुनासिक) लगे वर्ण भी लघु वर्ण ही माने जाते हैं। जैसे- अँ,खँ आदि।

छंद में मात्रा की गणना करते समय लघु मात्रा को खड़ी पाई (|) के रूप में दिखाया जाता है। इनकी मात्रा (१) होती है ।

| | |

जैसे - कमल

१ १ १

२) गुरु या दीर्घ वर्ण : जिन अक्षरों/ वर्णों के उच्चारण करने अर्थात् बोलते समय लघु वर्णों से अधिक समय लगता है उन्हें गुरु या दीर्घ वर्ण कहते हैं।

आ,ई,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ,अं,अः और इनके चिह्नों एवं मात्रावाले व्यंजन वर्ण जैसे चा,ची,पू,रे,रै,हो,हौ,अं,कः आदि वर्णों को गुरु या दीर्घ वर्ण कहते हैं। छंद की मात्रा गणना में इन गुरु या दीर्घ वर्णों को '२' रूप में दिखाया जाता है। इनकी मात्रा २ होती है।

जैसे- २ २

राधा

२ २

छंद में मात्रा गिनने के नियम:

- अ,इ,उ,ऋ स्वर छोटे/लघु/ह्रस्व होते हैं। इन स्वरों से युक्त व्यंजन / संयुक्त व्यंजन भी लघु होते हैं । इनका मात्रा भार १ (१) होता है।

जैसे - १ १ १ १ १

अ,उ,च,घ,क्ष आदि ।

१ १ १ १ १

चंद्रबिंदु लगे वर्ण भी लघु ही होते हैं। इनका मात्रा भार १ (१) होता है।

जैसे- १ १

अँ, चँ आदि ।

१ १

- स्वर रहित वर्ण का कोई मात्रा भार नहीं होता। जैसे च् आदि। हल लगे स्वर रहित वर्ण की मात्रा नहीं होगी।
- संयुक्त के पहले आया हुआ लघु वर्ण भी गुरु या दीर्घ होता है।

जैसे- s

वक्त

२

यहाँ व, संयुक्त वर्ण 'क्त' के पहले आया है अतः दीर्घ होगा।

➤ संयुक्त वर्ण की मात्रा लघु होती है। जैसे -

| s |

त्र, वक्त

१ २ १

➤ आ,ई,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ,अं,अः एवं उनके चिह्न या मात्रा लगे वर्ण दीर्घ मात्रावाले होते हैं। जैसे-

s s s s s | s | |

आला, साथी, अंक, कंबल आदि ।

२ २, २ २, २ १, २ १ १

➤ विसर्गयुक्त वर्ण का मात्रा भार दीर्घ होता है जैसे -

s s

अः, कः आदि ।

२ २

छंद के प्रकार

छंद मात्रिक,वार्णिक,मुक्त कई प्रकार के होते हैं। इन प्रकारों के उप प्रकार भी होते हैं। छंदों में चरण होते हैं। इन छंदों की अर्धाली अर्थात् आधे के आधे को चरण कहते हैं। उदाहरण के लिए चौपाई, दोहा, सोरठा आदि में चार चरण होते हैं। इन छंदों की पहचान उनकी मात्राओं की गणना के आधार पर होती है। ऐसे छंदों को मात्रिक छंद कहते हैं। मात्रिक छंद भी तीन प्रकार के होते हैं:-

- १) सम मात्रिक छंद : जिस छंद के सभी चरणों में मात्राओं की संख्या समान होती है उन्हें सममात्रिक छंद कहते हैं। जैसे चौपाई ।
- २) अर्धसम मात्रिक छंद : जिस छंद के पहले और तीसरे चरण तथा दूसरे और चौथे चरण की मात्राएँ समान होती हैं, उसे अर्धसम मात्रिक छंद कहते हैं। जैसे- सोरठा, दोहा आदि।
- ३) विषम मात्रिक छंद : जिस छंद के चरणों में अधिक समानता न हो वहाँ विषम मात्रिक छंद होता है। जैसे- कुंडलिया, छप्पय आदि।

यहाँ हम सोरठा छंद के बारे में जानेंगे।

सोरठा छंद :

सोरठा छंद एक अर्ध सम मात्रिक छंद है। इसके चार चरणों में से विषम चरणों अर्थात् पहले और तीसरे चरणों में 11-11 मात्राएँ तथा सम चरणों अर्थात् दूसरे और चौथे चरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं । उदाहरण के लिए -

s | | | | | | | s |

चरण १ जो सुमिरत सिधि होय = ११ मात्राएँ

२ १ १११ १ १ २ १

|| s|| |||| |||

चरण २ गण नायक करिबर बदन = १३ मात्राएँ

११ २११ ११११ १११

||| |s|| s|

चरण ३ करहु अनुग्रह सोय = ११ मात्राएँ

१११ १२११ २१

s| s| || || |||

चरण ४ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन = १३ मात्राएँ

२ १ २१ ११ ११ १११

अन्य उदाहरण -

II SII S SI प्रथम चरण

(१) सुनि केवट के बैन, } = ११ मात्राएँ

११ २११ २ २१

SI ISS IIIS द्वितीय चरण

(२) प्रेम लपेटे अटपटे । } = १३ मात्राएँ

२१ १२२ १११२

IIIS IIS III

(३) विहँसे करुणा अयन, तृतीय चरण

११२ ११२ १११ } = ११ मात्राएँ

III SIS III II

(४) चितड़ जानकी लखन तन ॥ } = १३ मात्राएँ चतुर्थ चरण

१११ २१२ १११ ११

प्रस्तुति :

रामहित यादव

ramhityadav58@gmail.com